

सुख - दुःख- सुमित्रानंदन पंत-

हिंदी रचना-बी०ए०पार्ट-2,

डॉ०मनोज कुमार सिंह,हिंदी विभाग

राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

सुख - दुःख- सुमित्रानंदन पंत

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,

मैं नहीं चाहता चिर-दुःख,

सुख-दुःख की खेल-मिचौनी

खोले जीवन अपना मुख!

सुख-दुःख के मधुर मिलन से

यह जीवन हो परिपूरन ;

फिर घन में ओझल हो शशि,

फिर शशि से ओझल हो घन!

जग पीड़ित है अति-दुःख से
जग पीड़ित रे अति सुख से,
मानव-जग में बंट जाएं
दुःख-सुख से औ' सुख-दुःख से!

अविरत दुःख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न;
दुःख-सुख की निशा-दिवा में,
सोता-जगाता जग-जीवन!

यह सांझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का;
चिर हास-अश्रुमय आँगन
रे इस मानव जीवन का!

व्याख्या:-कविवर पंत कहते हैं कि वे अपने जीवन में सदा सुख या दुख नहीं चाहते हैं। उन दोनों का मेल होना चाहिए। जैसे बच्चे आँख - मिचौनी खेल में कुछ समय आँखें बन्द करके फिर खोल देते हैं, उसी प्रकार जीवन के खेल में सुख या दुख कुछ समय आँख खोले और फिर बन्द करे। कहने का मतलब यह है कि मानव के जीवन में कुछ समय सुख है और कुछ समय दुख। तभी जीवन, खेल की ही तरह मज़ेदार होगा। नहीं तो जीना भी कठिन होगा।

जीवन में सुख और दुख का मीठा मिलाप होना चाहिए। जिस समय कुछ समय बादलों में अदृश्य रहने के बाद चन्द्रमा आकाश में फिर चांदनी फैलता है उसी प्रकार कुछ समय तक दुखों में अदृश्य रहने के बाद सुख को भी फिर जीवन में दर्शन देना चाहिए। बादलों में छिपे चाँद के दिखाई देते ही मन को बड़ा आनन्द मिलता है। वैसे ही कुछ काल तक दुख करने का अनुभव के बाद मानव को सुख मिलेगा तो उसे उस सुख से अत्यंत

संतोष मिलता है। इसी से कवि चाहता है मानव जीवन में सुख-दुख बारी-बारी से आए तो अच्छा होगा।

कवि कहते हैं कि अधिक सुख और दुख दोनों से भी दुख ही पाते हैं। मानव सुख की अधिकता ही नहीं बल्कि सुख की अधिकता भी सह नहीं सकेगा। अधिक सुख दुख ही देगा। इसलिए उसका बराबर बंटवारा हो जाना चाहिए। याने सुख-दुख के समन्वय से ही मानव जीवन आराम पा सकता है।

कवि कहते हैं कि लगातार मिलनेवाले सुख और दुख दोनों मानव को दुख ही देते हैं। इसलिए रात और दिन बदलते ही रहते हैं , उसी प्रकार मानव - जीवन में सुख और दुख को बदलते रहना चाहिए। एसा होगा तो रात रूपी दुख में मानव जीवन सोता रहेगा दिन रूपी सुख में जागता रहेगा। रात को दुख का प्रतीक और दिन को सुख का प्रतीक मानता है।

मानव जीवन में हँसी और रुलाई दोनों सदा रहते हैं।
जैसे सबेरा होता है, शाम होती है, फिर सबेरा होता
है वैसे ही जीवन में सुख मिलते हैं, फिर दुख, फिर सुख।
इस तरह सुख-दुख में हँसते रोते मानव जीवन आगे
बढ़ता है। सुख की हँसी और दुख की रुलाई दोनों मानव
जीवन के लिए अनिवार्य होता है। यही हँसना रोना तो
वास्तव में मानव का जीवन है या दुनिया का जीवन है।